डॉ. समीर कुमार वर्मा **(Sep 2021).** पूर्वमध्यकालीन भारतीय स्थापत्य शैली एवं मंदिरों का वकासः ववरणात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*15*(9),11-18
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

पूर्वमध्यकालीन भारतीय स्थापत्य शैली एवं मंदिरों का वकासः ववरणात्मक अध्ययन

डॉ. समीर कुमार वर्मा
एसो सएट प्रोफेसर, इतिहास वभाग
सत्यवती कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली वश्व वद्यालय

सार

भारत का इतिहास एक ऐसा महाकाव्य है, जिसमे मानव संस्कृति के पहले निशान से लेकर कई धर्मों का जन्म, महान सभ्यताओं के उत्थान और पतन व दर्जनों बाहरी आक्रमण समाहित हो यहां पर कई सभ्यताओं ने जन्म लया और समय के साथ उनका पतन हुआ। सभ्यता के साथ यहां पर कई धर्मों का भी उदय हुआ हिंदू धर्म के साथ ही यहां बौद्ध धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म और पारसी धर्म वक सत हुए

बीज शब्द मंदिर संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, वास्तुकला, स्थापत्य, शैली

भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। चाहे हम पश्चिम से तुलना करें या स्वयं की उपलब्धियों की गतिशीलता का मूल्यांकन करें तो यह स्पष्ट होता है क माया न सर्फ सांस्कृतिक बल्कि सभ्यता के तौर पर भी बेहद समृद्ध रहा है। भारत की सांस्कृतिक एवं सभ्यता के रूप में उपलब्धियों को समझने के लए सबसे पहले यह समझना जरूरी है क आ खरकार संस्कृति एवं सभ्यता का अर्थ क्या होता है?

सभ्यता मानव के सामाजिक एवं भौतिक वकास को बताती है। इससे मानव के प्रारं भक वकास का पता चलता है। अतीत से लेकर वर्तमान तक मनुष्य ने जो सम्पूर्ण उन्नति की है चाहे वो भौतिक, मान सक या आध्यात्मिक रूप से दो, उसे हम 'सभ्यता' कहते है। यह भी कहा जा सकता है क मनुष्य द्वारा प्रकृति से प्राप्त साधनों और अपने मस्तिष्क का उपयोग कर जो भौतिक प्रगति की है, उसे सभ्यता कहा जा सकता है। सभ्यताए परिवर्तनशील और प्रगतिशील होती है। प्राचीनकाल में मानव जंगली जीवन जीते थे। प्रारम्भ में मानव सर्दी, नमी, बरसात को सहन करता हुआ जंगलों में रहता था। कालान्तर में इन से बचने के लए गुफाओ, कच्ची झोप ड़यो में रहना शुरू कया। वर्तमान में जगनचुम्बी इमारतों को देखा जा सकता है। पहले मानव जीवनयापन के लए कंदमूल और शकार पर निर्भर रहते थे। इसके बाद मानव में कृ ष, पशुपालन और व्यावसाय करना शुरू कया प्रारम्भ में मानव आवागमन अपने पैसे से करता था। उसके बाद उसने बैल, ऊंट और घोड़ो को काम में लया। वर्तमान में कार, ट्रेन, एयरोप्लेन आदि कई अ वष्कार देखे जा सकते है। यही नही अब तो इंसान गल बढ़ और चाँद पर बसने की योजना बना रहा है। मानव के जीवन स्तर में इसी परिवर्तन को सभ्यता कहा जा सकता है।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा

Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

डॉ. समीर कुमार वर्मा **(Sep 2021).** पूर्वमध्यकालीन भारतीय स्थापत्य शैली एवं मंदिरों का वकास: ववरणात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*15*(9),11-18
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

प्राय: सभ्यता और संस्कृति को समानार्थी समझ लया जाता है, जब क ये दोनों अवधारणाएँ अलग-अलग ही सभ्यता से कसी संस्कृति की बाहरी चरम अवस्था का बोध होता है। संस्कृति वस्तार है तो सभ्यता कठोर स्थिरता समयता में भौतिक पक्ष प्रधान है, जब क संस्कृति में वैचारिक पक्ष प्रवत होता है। यदि सभ्यता शरीर है तो संस्कृति उसकी आत्मा सभ्यता और संस्कृति में मौ लक अन्तर यह है क, साम्यता का सम्बन्ध जीवनयापन या सुख-सु वधा की बाहरी वस्तुओं से हैं, जब क संस्कृति का सम्बन्ध आन्तरिक वस्तुओं से सभ्यता की माप की जा सकती है, कन्तु संस्कृति की माप नहीं की जा सकती।

व भन्न वद्वानों ने सभ्यता व संस्कृति को अलग-अलग तरीके से परिभा षत भी कया हैं और इनके मध्य अंतर को भीस्पष्ट कया है।

ग्रीन ने सभ्यता व संस्कृति के मध्य अन्तर को स्पष्ट करते हुए लखा है क, 'एक संस्कृति तब ही सभ्यता बनती है, जब क उसके पास एक ल खत भाषा, दर्शन, वशेषीकरण युक्त श्रम वभाजन, एक जटिल व ध और राजनीतिक प्रणाली हो।'

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट होता है क यदि हम पूर्व मध्यकालीन भारत के मंदिरों का ववरणात्मक अध्ययन इस शोधपत्र मेंकर रहे हैं तो यह निश्चित रूप से भारत की सभ्यता की एक वशेष कालखंड का अध्ययन करना है।

सन 750 से 1200 के मध्य का समय भारतीय इतिहास में आरम्भिक मध्यकालीन युग के नाम से जाना जाता है। पूर्व में इतिहासकारों द्वारा इसे अंधकार युग' की संज्ञा दी गई थी। यह संभवतः इस लए क इस दौरान संपूर्ण राष्ट्र छोटे-छोटे प्रांतों में वभक्त था, जो आपस में युद्ध करने में व्यस्त रहते थे। कन्तु नवीनतम अध्ययन इस बात की ओर इशारा करते हैं क राजनीतिक रूप से छिन्न- भन्न भारत भी कला, साहित्य तथा भाषा के क्षेत्र नई समृद्ध सांस्कृतिक उपलब्धियों का केन्द्र बना। जब क मंदिर स्थापत्य कला भारतीय साहित्य के क्षेत्र में तो कुछ सर्वश्रेष्ठ उदाहरण इसी काल की देन हैं। इस प्रकार 'अंधेरे से हटकर इसे भारतीय इतिहास का सबसे प्रभावशाली काल कहा जा सकता है।

पूर्व मध्यकालीन शल्प शास्त्रों में मंदिर स्थापत्य की तीन बड़ी शै लयां बताई गई हैं- प्रथम है नागर शैली, द् वतीय द्र वड़ शैली और तृतीय वेसर शैली

इस काल के दौरान नि र्मत हुए मंदिरों की स्थापत्य कला में हम तीन श्रे णयों का उदय पाते हैं, जिन्हें नागर, द्र वड़ तथा वेसर (म श्रत) के नाम से जाना गया | नागर शैली की प्रमुख वशेषता वशाल मीनारों का निर्माण था । इस शैली में नि र्मत मंदिर उत्तर भारत के वस्तृत भूभाग में फैले हैं, वशेषकर मध्य भारत, गुजरात तथा उड़ीसा में। तथा प प्रच लत नागर शैली में भी क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय वशेषताएं थीं। इस शैली के प्रमुख मंदिरों में भुवनेश्वर में लंगराज मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, द क्षण भारत में मंदिर निर्माण की द्र वड़ शैली वक सत हुई। चोल

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

शासनकाल में यह अपने गौरव के उच्चतम स्तर तक पहुंची। इस शैली की प्रमुख वशेषताएं थीं गर्भगृह, वमान, मंडप गोपुरम का निर्माण गर्भगृह से तात्पर्य था मुख्य देव का अन्तर्निवास स्थल गर्भगृह के ऊपर बनी इमारतों को वमान कहा गया, मंडप अं कत स्तंभों का वशाल भवन, जो गर्भगृह के सम्मुख नि र्मत होता था। इस शैली का सर्वा धक प्रमुख मंदिर चोल शासक राजराजा द्वारा तंजौर स्थित बृहदेश्वर मंदिर है। वेसर मन्दिर मश्र पद्धति का प्रतिनि धत्व करते हैं। ये चालुक्य शासकों के संरक्षण में नि र्मत हुए तथा बदामी (कर्नाटक) के निकट प कल में पाए गए। मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में भी इस युग ने नई ऊंचाइयों को छुआ। चोल कलाकारों द्वारा तांबे की बनी नटराज की मूर्ति इस युग की अनमोल देन है। इन मूर्तियों में शव को नृत्य करने की भं गमा में दर्शाया है, जो क अपनी धुन तथा संतुलन में अतुलनीय हैं।

नागर शैली - नागर शैली का प्रचलन हिमालय और वन्ध्य पहाड़ों के बीच की धरती में पाया जाता है।

द्र वड़ शैली - द्र वड़ शैली कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच की भू म में अपनाई गई।

वेसर शैली - वेसर शैली वन्ध्य पहाड़ों और कृष्णा नदी के बीच के प्रदेश से सम्बन्ध रखती है।

नागरशैली

इस शैली के सबसे पुराने उदाहरण गुप्तकालीन मंदिरों में, वशेषकर, देवगढ़ के दशावतार मंदिर और भतर गाँव के ईट नि र्मत मंदिर में मलते हैं।

नागर शैली की दो बड़ी वशेषताएँ हैं- इसकी व शष्ट योजना और वमान इन्हीं वशेषताओं के कारण इस शैली की पहचान स्पष्ट रूप से की जाती है। इसकी मुख्य भू म आयताकार होती है जिसमें बीच के दोनों ओर क्र मक वमान होते हैं जिनके चलते इसका पूर्ण आकार तिकोना हो जाता है। यदि दोनों पाश्र्वों में एक-एक वमान होता है तो वह तीर्थ कहलाता है। दो-दो वमानों वाले मध्यभाग को सप्तस्थ और चार-चार वमानों वाले भाग को नवस्थ कहते हैं। ये वमान मध्य भाग से लेकर मंदिर के अंतिम ऊँचाई तक बनाए जाते हैं। मंदिर के सबसे ऊपर शखर होता है। नागर मंदिर के शखर को रेखा शखर भी कहते हैं। नागर शैली के मंदिर में दो भवन होते हैं - एक गर्भगृह और दूसरा मंडपा गर्भगृह ऊँचा होता है और मंडप छोटा होता है। गर्भगृह के ऊपर एक घंटाकार संरचना होती है जिससे मंदिर की ऊँचाई बढ़ जाती है। नागर शैली के मंदिरों में चार कक्ष होते हैं- गर्भगृह, जगमोहन, नाट्य मंदिर और भोग मंदिर प्रारम्भिक नागर शैली के मंदिरों में स्तम्भ नहीं होते थे।

8वीं शताब्दी आते-आते नागर शैली में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नए लक्षण भी प्रकट हुए। बनावट में कहीं-कहीं व वधता आई। जैसा क हम जानते हैं क इस शैली का वस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर द क्षण में बीजापुर तक और पश्चिम में पंजाब से लेकर पूरब में बंगाल तक था। इस लए स्थानीय व वधता का आना अनपे क्षत नहीं था, फर भी तिकोनी आधार भू म और नीचे से ऊपर घटता हुआ शखर का आकार सर्वत्र एक जैसा रहा। भुवनेश्वर में स्थित लंगराज मंदिर इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

द्र वड़ शैली

द्र वड़ स्थापत्य शैली का सम्बन्ध द क्षण और दक्कन के मंदिरों से हैं पर कुछ पुराने नमूने उत्तर भारत और मध्य भारत में भी पाए गए हैं, जैसे- लाड़खान का पार्वती मंदिर तथा ऐहोल के कौन्ठगु ड और मेगुती मंदिरा द्र वड़ शैली की प्रमुख वशेषता इसका परा मडीय वमान हैं। इस वमान में मंजिल पर मंजिल होते हैं जो बड़े से ऊपर की ओर छोटे होते चले जाते हैं और अंत में गुम्बाकार आकृति होती है जिसका तकनीकी नाम स्तूपी अथवा स्तृ पका होता है। समय के साथ द्र वड़ मंदिरों में वमानों के ऊपर मूर्तियों आदि की संख्या बढ़ती चली गयी। द्र वड़ मंदिर में एक आयताकार गर्भगृह होता है जिसके चारों ओर प्रद क्षणा का मार्ग होता है। द्र वड़ मंदिरों में समय के साथ कई वशेषताएँ जुड़ती चली गई, जैसे- स्तम्भ पर खड़े बड़े कक्ष एवं •ग लया रेत था वशालकाय गोपुर (द्वार)।

द्र वड़ शैली के दो सबसे प्रमुख लक्षण हैं :- i) इस शैली में मुख्य मंदिर के चार से अ धक पार्श्व होते हैं ii) मंदिर का शखर और वमान परा मडीय आकृति के होते हैं। द्र वडीय स्थापत्य में स्तम्भ और प्लास्टर का प्रचुर प्रयोग होता है। यदि इस शैली कोई शव मंदिर है तो उसके लए अलग से नंदी मंडप भी होता है। इसी प्रकार ऐसे वष्णु मंदिरों में एक गरुड़ मंडप भी होता है। उत्तर भारतीय मंदिरों के वपरीत द क्षण भारतीय मंदिरों में चार दिवारी भी होती है। कांची में स्थित कैलासनाथ मंदिर द्र वड़ स्थापत्य का एक प्रमुख उदाहरण है। यह मंदिर राज संह और उसके बेटे महेंद्र III द्वारा बनाया गया है।

वेसरशैली

इस स्थापत्य शैली का प्रादुर्भाव पूर्व मध्यकाल में हुआ। वस्तुतः यह एक म श्रत शैली है जिसमें नागर और द्र वड़ दोनों शै लयों के लक्षण पाए जाते हैं। वेसर शैली के उदाहरणों में दक्कन भाग में कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों द्वारा तथा होयसालों के द्वारा बनाए गए मंदिर प्रमुख हैं। इसमें द्र वड़ शैली के अनुरूप वमान होते हैं पर ये वमान एक-दूसरे से द्र वड़ शैली की तुलना में कम दूरी पर होते हैं जिसके फलस्वरूप मंदिर की ऊँचाई कुछ कम रहती है। वेसर शैली में बौद्ध वैत्यों के समान अर्धचंद्राकार

संरचना भी देखी जाती है, जैसे- ऐहोल के दुर्गा मंदिर में मध्य भारत और दक्कन में स्थान-स्थान पर वेसर शैली में कुछ अंतर भी पाए जाते हैं. उदाहरणस्वरूप, पापनाथ मंदिर और प डकल मंदिरा प्राचीनकाल से ज्यादा समृद्ध भारतीय स्थापत्य की वरासत पूर्व मध्यकाल एवं मध्यकालीन भारत के दौर में देखने को मलती है। गुप्तकाल तो स्व र्णम युग के नाम से जाना जाता है।

यदि हम पूर्व मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य की वरासत को देखें तो निम्न ववरण देखने को मलता हैमौर्यकाल 4थी शती ई.पू. के अनेक नगर क पलवस्तु, कुशीनगर, उरुबिल्व आदि एक ही नमूने के थे, यह इनके नगर द्वारों से प्रकट होता है। जगह-जगह पर बाहर निकले हुए छज्जों, स्तंभों से अलंकृत गवाक्षों, जंगलों और कटहरों से बौद्धकालीन प वत्र नगरियों की भावुकता का आभास मलता है। राज्य का आश्रय पाकर अनेक स्तूपों, वैत्यों, बिहायें, स्तम्भों, तोरणों और गुफा मंदिरों में वास्तुकला का चरम वकास हुआ। तत्कालीन वास्तुकौशल के उत्कृष्ट उदाहरण

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा

Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

पत्थर और ईंट के साथ साथ लकड़ी पर भी मलते हैं, जिनके वषय में सर जॉन मार्शल ने "भारत का पुरातात्विक सर्वेक्षण, 1912-13" में लखा है क "वे तत्कलीन कृतियों की अद्‌वतीय सूक्ष्मता और पूर्णता का दिग्दर्शन कराते हैं। उनके कारीगर आज भी यदि संसार में आ सकते, तो अपनी कला के क्षेत्र में कुछ वशेष सीखने योग्य शायद न पाते"। साँची, भरहुत, कुशीनगर, बेसनगर वदिशा, तिगावों जबलपुर, उदय गरि, प्रयाग, काली मुम्बई, अजन्ता, इलोरा, वदिशा, अमरावती, ना सक, जुनार पूजा, कन्हेरी, भुज, कोंडेन, गांधार वर्तमान कंधार- अफगानिस्तान, तक्ष शला पश्चिमोत्तर सीमान्त में चौथी शती ई.पू. से चौथी शती ई. तक की वास्तुकृतियाँ कला की दृष्टि से अनूठी हैं। द क्षण भारत में गुंतूपल्ले कृष्ण जिला और शंकरन्पहाड़ी वजगाप न्जिता में शैतकृत वास्तु के दर्शन होते मैं साँची, नालन्दा और सारनाथ में अपेक्षाकृत बाद की वास्तुकृतियाँ हैं। पाँचवीं शती से ईट का प्रयोग होने लगा। उसी समय से ब्राह्मण प्रभाव भी प्रकट हुआ। तत्कालीन ब्राह्मण मंदिरों में भीटागाँव कानपुर जिला, बुधरामऊ फतेहपुर जिला, सीरपु और खरोद रायपुर जिला, तथा तेर शोलापुर के निकट के मंदिरों की श्रृंखला उल्लेखनीय है। भीटागाँव का मंदिर, जो शायद सबसे प्राचीन है, 36 फुट वर्ग के ऊँचे चबूतरे पर बुर्ज की भाँति 70 फुट ऊँचा खड़ा है। बुधरामऊ का मंदिर भी ऐसा ही है। अन्य हिंदू मंदिरों की भाँति इनमें मण्डप आदि नहीं हैं, केवल गर्भगृह हैं। भीतर दीवारें यद्य प सादी हैं, तथा प उनमें प`, कंगरियाँ, दिल्हे, आले आदि, रचना की कुछ व शष्टताएँ इमारतों की प्राचीनता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके व भन्न भागों का अनुपात सुंदर है और वास्तु प्रभाव कौशलपूर्ण आलों में बौद्ध चैत्यों की डाटों का प्रभाव अवश्य पड़ा दिखाई पड़ता है। इनकी शै लयों का अनुकरण शताब्दियों बाद बनने वाले मंदिरों में भी हुआ है। हिंदू वास्तुकौशल का वस्तार गढलों, समा धयों, दुर्बी, बाव ड़यों और घाटों में भी हुआ, कन्तु देशभर में बिखरे मंदिरों में यह वशेष मुखर हुआ है। गुप्तकाल 350-650 ई. में मंदिर वास्तु के स्वरूप में स्थिरता आई । ७वीं शती के अंत में शखर महत्वपूर्ण और अनिवार्य अंग समझा जाने लगा। मंदिर वास्तु में उत्तर की ओर आर्य शैली और द क्षण की ओर द्र वड़ शैली स्पष्ट दीखती है। ग्वा लयर के "तेलीका मंदिर" ११वीं शती और भुवनेश्व रके "बैताल देवल मंदिर" ९वीं शती उत्तरी शैली का प्रतिनि धत्व करते हैं और सोमंगलम्, म णमंगलम् आदि के चोल मंदिर ११वीं शती द क्षणी शैली का कंतु ये शै लयाँ कसी भौगो लक सीमा में बँधी नहीं हैं। चालुक्यों की राजधानी प दकल के दस मंदिरों में से चार उत्तरी शैली के और छह द क्षणी शैली के हैं। 10 वीं-11वीं शती में पल्लव, चोल, पांड्य, चालुक्य और राष्ट्रकूट सभी राजवंशों ने द क्षणी शैली का पोषण कया। दोनों ही शै लयों पर बौद्ध वास्तु का प्रभाव है, वशेषकर शखरों में भारत की ऐतिहा सक इमारतों की माया और रहस्य के पीछे अनेक कंवदंतियाँ हैं। मध्य भारत के कुछ सर्वश्रेष्ठ मंदिर एक काल्पनिक राजकुमार जनकाचार्य द्वारा बनाए कहे जाते हैं, जिसे ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त स्वरूप बीस वर्ष इस काम में लगाने पड़े थे। एक अन्य कंवदंति के अनुसार

ये असाधारण इमारतें एक ही रात में पाण्डवों न खड़ी की थीं। उत्तरी गुजरात का वशाल मंदिर 1125 ई. गुजरात-नरेश सद्धराज द्वारा और खान देश के मंदिर गवाली राजवंश द्वारा नि र्मत कहे जाते हैं।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा

Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

द क्षण के अनेक मंदिर राजा रामचंद्र के मंत्री हेमद पन्त के धा र्मक उत्साह से बने कहे जाते हैं और 13वीं शती के कुछ मंदिरों की शैली ही हेमद पन्ती कहलाने लगी है। इसे अज्ञात निर्माताओं की शालीनता कहें या ऐतिहा सक त मस्र, कंतु इसमें सन्देह नहीं क मंदिर वास्तु, जिसे अनूठे उदाहरण भुवनेश्वर के लंगराज 1000 ई. मुक्तेश्वर 975 ई., ब्रह्मेश्वर 1075 ई., रामेश्वर 1075 ई., परमेश्वर, उत्तरेश्वर, ईश्वरेश्वर, भरतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर आदि मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, ममहितपुरम्के सप्तस्थ, कांतीवरम्का कैलाशनाथ मंदिर, श्री ववासनातुर त्रिचनापल्ली जिला काको रंगनाथ मंदिर, त्रिचनापल्ली का जम्बुकेश्वर मंदिर, द्वारा सुरम् और जिला का ऐसवतेश्वर मंदिर, तंजौर के सुब्रह्मण्यम् एवं बृहदेश्वर मंदिर, वजयनगर का व लस्वामी मंदिर 16वीं शती, तिरुवल्लूर एवं मदुरा के वशाल मंदिर, त्रावनकोर का शचीन्द्रम्मंदिर 16वीं शती, रामेश्वर के वशाल मंदिर 17वी शती बेलूर मैसूर का वन्नकेशव मंदिर 12वीं शती, सोमनाथपुर मैसूर का केशव मंदिर 1268 ई., पुरी का जगन्नाथ मंदिर 1100 ई., खजुराहो की आदिनाथ, वश्वनाथ, पार्श्वनाथ और कंदरिया महादेव मंदिर, करादू मेवाड़ के शवमंदिर 11वीं शती, आबू के तेजपाल 13वीं शती तथा वमल मंदिर 11वीं शती, ग्वा लयर का सास बहू मंदिर एवं उदयेश्वर मंदिर दोनों 11वीं शती से जाकपुर काठियावाड़ का नवलखा मंदिर 11वीं शती, प न का सोमनाथ मंदिर 12वीं शती, मोधेरा बड़ोदा का सूर्य मंदिर 11वीं शती, अंबरनाथ थाना जिला का महादेव मंदिर 11वीं शती, जोगदाना सक जिला का मानकेश्वर मंदिर, मथुरा वृंदावन का गो वंददेव मंदिर 1590ई., शत्रुंजय पहाड़ी काठियावाड़ के जैन मंदिर, सापुरसाद जोधपुर का आदिनाथ मंदिर 1450 ई. आदि देश भर में बिखरे पड़े हैं, जो भव्यता, वशालता, उत्कृष्टता और सर्थकता सभी दृष्टियों से अनुपम है। देश में साथ-साथ वक सत होते हुए बौद्ध वास्तु, जैन वास्तु, हिंदू वास्तु, तथा द्र वड़ वास्तुकला की ये झाँ कयाँ वशाल भारत की परंपरागत धा र्मक सहिष्णुता का प्रमाण हैं।

जब से मनुष्य ने आवास बनाया तब से वज्ञान की शुरुआत हुई जिसे स्थापत्य वज्ञान या वास्तुकला वज्ञान के नाम से जाना जाता है। हड़प्पा सभ्यता से आधुनिक काल तक प्रत्येक युग में स्थापत्य कला ने अ मट छाप प्रत्येक मनुष्य पर छोड़ी है।

मुगल सम्राट स्थापत्य कला के प्रेमी थे, इ लए मुगल काल बहुत सारे तथा भन्न- भन्न स्थापत्य कला के नमूने देखे जा सकते हैं। मुगल काल की स्थापत्य कला को हम चार चरणों में जान सकते हैं जिनकी शुरुआत बाबर ने की तथा वकास अकबर ने कया, चरम शाहजहाँ के समय यानि जिसे इतिहास कहा जाता है तथा पतन औरंगजेब के समय में हुआ। मुगलकाल की स्थापत्य कला पर ईरानी, इरानी टांस आक्सियाना, सल्तनतकारी भारतीय स्थापत्य का प्रभाव देखा जा सकता है। सही अर्थों में मुगलकालीन स्थापत्य कला इण्डो-इस्ला मक स्थापत्य का मश्रण हैं, जिसमें भारतीय और इस्ला मक दोनों का प्रभाव देखा जा सकता है।

मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर ने की, तब जाहिर है क बाबर ने भी स्थापत्य कला में अपना हाथ ज़रूर आजमाया होगा, बाबर की स्थापत्य कला के वषय में बाबरनामा के अनुसार “तत्कालीन वास्तुकला में असंतुलन के कारण बाबर ने इमारतों का सामंजस्यपूर्ण और ज्या मतीय पर ध्यान दिया।" बाबर ने पानीपत की काबुली मस्जित तथा सम्भल में जामा मस्जिद बनवाई।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा

Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

हुमायूँ जिसका जीवन भाग-दौड़ व युद्ध में बीता उसने भी स्थापत्य कला में अपना हाथ ज़रूर आजमाया। फतेहाबाद, आगरा में मस्जिद निर्माण करवाया तथा हुमायूँ का मकबरा बनवाया जो क ईरानी- भारतीय शै लयों का मश्रण इमारत है।

शेरशाह सूरी वास्तुकला के प्रेमी थे। उन्होंने दिल्ली का पुराना कला बनवाया वहीं शेरशाह का मकबरा, बिहार के रोहतास जिले में सासाराम नामक स्थान पर एक तालाब के बीच ऊँचे चबूतरे पर बना है यह आकार एवं गौरव, दोनों दृष्टिकोण से • भारतीय मुसलमानी निर्माण कला का चमत्कार हैं तथा हिन्दू-मुस्लिम वास्तुकलात्मक वचारों का आनंदजनक सम्मिश्रण प्रद र्शत करता है।

'अकबर से ही मुगलकाल की स्थापत्य कला का वकास माना जाता है, अकबर ने हिन्दू और मुसलमान शैली का व्यापक समन्वय अपनी स्थापत्य कला में प्रद र्शत कया था। अकबर ने निर्माण कार्य में पत्थर और संगमरमर का उपयोग कया था। यहाँ तक क इमारतों पर कहानी तक अं कत करवाने का श्रेय अकबर को जाता है।

अकबर ने बहुत सी इमारतें बनाई जिसमें से आगरा का लाल कला, जहाँगीरी महल, अकबर महल, लाहौर कला, इलाहाबाद का कला, दीवान ए आम बीरबल महल आदि जो एक-दूसरे से स्थापत्य कला में भन्न हैं। अकबर ने पंचमहल, जामा मस्जिद, बुलंद दरवाजा, आदि का निर्माण करवाया। पंचमहल हिन्दू-मुसलमान स्थापत्य का सुंदर उदाहरण है।

जहाँगीर के समय को स्थापत्य कला का वश्राम काल कहा जाता है, वास्तुकला के स्थान पर बाग-बगीचे, चत्रकारी कोजहाँगीर ने ज्यादा महत्त्व दिया था। उन्होंने पत्नी नूरजहाँ के लए सफेद संगमरमर का आगरा में स्थित एमादुद्दौला कामकबरा बनवाया। दूसरी ओर जहाँगीर का मकबरा भी नूरजहाँ ने बनवाया था, जिस पर संगमरमर की पच्चीकारी की गई है।

शाहजहाँ के समय को स्थापत्य कला का स्वर्ण युग माना जाता है। शाहजहाँ की बनवाई गई इमारतें मुँह से बोलती हैं उसमें वशेष प्रकार की सुंदरता और मौ लकता है।

अकबर द्वारा लाल पत्थर से बनवाई गई कई इमारतों जिसमें दीवान ए आम, मच्छी भवन, शीश महल झरोखा दर्शन आदि को संगमरमर से पुनः बनवाया।

शाहजहाँ ने दुनिया के सात अजूबों में से एक 'ताजमहल' का निर्माण करवाया। यह इमारत फारसी ढंग से बनी हुई है। दिल्ली के लाल कले का निर्माण भी शाहजहाँ ने करवाया था। दिल्ली की जामा मस्जिद भी लाल पत्थरों से शाहजहाँ ने बनवाई।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा

Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021

डॉ. समीर कुमार वर्मा **(Sep 2021).** पूर्वमध्यकालीन भारतीय स्थापत्य शैली एवं मंदिरों का वकास: ववरणात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*15*(9),11-18
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

औरंगजेब के समय स्थापत्य कला का पतन हुआ। अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव तथा शासक राजनीतिक परेशानियों के कारण इस काल की वास्तुकला में हताशा उत्पन्न होता है, वहीं दूसरी ओर औरंगजेब स्थापत्य कला प्रेमी भी नहीं था। औरंगजेब ने राबिया उर्दू फारसी मकबरा बनवाया।

बाबर ने ज्या मतीय व ध पर आधारित एक उद्यान आगरा में लगवाया, जिसे नूर अफगान नाम दिया।

शेरशाह ने कला-ए-कुहना उसी परिसर में शेर मंडल और अष्टभुजाकर तीन मंजिला मंडप का निर्माण करवाया।

अकबर ने हुमायूँ का मकबरा ज्या मतीय चतुर्भुज आकार के बने उद्यान के मध्य एक ऊँचे चबूतरे पर स्थिति है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Singh, Upinder (2012) Rethinking Early Medieval India: A Reader, Oxford University Press.

दूबे, एच. एन. (2012): द क्षण भारत का वृहत इतिहास, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

थापर, रो मला (2018): भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

पांडे, वशम्भरनाथ (2019): भारत और मानव संस्कृति, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

बाशम, ए. एल. (2012): अद्भुत भारत, शवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।

दिनकर, रामधारी संह (2017) - संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ. समीर कुमार वर्मा

Submitted: 27 July 2021, Revised: 09 Aug2021, Accepted: 18 Sep 2021, Published 30 Sep 2021